CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

अभ्रान्तात्मा

लेखक

मौलाना सैय्यद अली नक़ी नक़वी मुजतहिद

प्रोफ़ेसर लखनऊ विश्वविद्यालय

भाषान्तरकार

सैय्यद मुहिब्बुल हसन रिज़वी "समर" हल्लौरी

बी० ए० (सी० टी०)

सहायक अध्यापक

यादगारे हुसैनी हायर सिकेन्डरी स्कूल

इलाहाबाद ।

प्रकाशक

सैय्यद इब्ने हुसैन नक़वी

आनरेरी सेक्रेट्री

इमामिया मिशन

लखनऊ ।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

दो शब्द

आज हम संसार के इस वातावरण में जब कि चारों ओर अत्याचार एवं हिंसा का अँधकार फैल रहा है एक प्रकाशमय पथ-प्रदर्शक की जीवनी को आप के समक्ष उपस्थित कर रहे हैं जिस का नाम अली था। अली में एक ही समय इतने मानवीय गुण थे जिन की उपस्थिति संसार के किसी भी व्यक्ति में एक साथ नहीं मिलतीं।

हमें आशा है कि इस पत्रिका द्वारा मानव समाज का उद्धार हो सकता है।

भवदीय

सैयद इब्ने हुसैन नक़वी
आनरेरी सेक्रेटरी
इमामिया मिशन,
लखनऊ।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

अभ्रान्तात्मा

मनुष्य एक सत्य मार्ग दिखाने वाले की खोज में सदा लगा रहता है। उसकी यह प्यास उस को हर चमकते हुये बालू के तख़्ते की ओर दौड़ाती है। वह पानी समझकर दौड़ जाता है परन्तु बाद में धोखा होता है। एक ऐसे अभ्रान्त एवं निर्दोश मनुष्य की आवश्यकता है जिस के सारे जीवन पर गहरी दृष्टि डालने पर उस के गौरव तथा यश में किसी प्रकार की कमी न मिले और वह मानव समाज के किसी एक वर्ग या किसी एक स्थान के रहने वालों के लिये ही उदाहरण न हो बलिक समस्त संसार के प्राणियों के लिये उस का जीवन एक आदर्श हो। साधारणतः बड़े बड़े आदमियों के जीवन को देखने से कम लोग दिखाई पड़ते हैं जो वास्तव में बड़े हों। उदाहरण के तौर पर नौशेरवां बादशाह और विक्रमादित्य जैसे अपने न्याय के लिये बहुत प्रसिद्ध हैं परन्तु वह बादशाहों के लिये आदर्श पूर्ण हैं। रियाया को किस प्रकार मिल जुल कर शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करना चाहियें यह पाठ हम को नौशेरवां के जीवन चरित्र से नहीं मिलता। हातिम व हरिश्चन्द्र की दान देने वाली आदत उन के प्रसिद्ध होने का कारण बनी परन्तु देश तथा जाति के लिये किस प्रकार लड़ाई लड़ी जाती है यह बात हम को उन के जीवन इतिहास में नहीं मिलती। बड़े बड़े योद्धाओं का नाम बहादुरी में हमारे सामने आता है परन्तु अत्याचार के सहन की शक्ति का कोई पता उन के यहां नहीं मिलता। यह हो सकता है कि हर गुण के उदाहरण के अवसर पर एक एक आदमी का नाम ले दिया जाये परन्तु इन सब गुणों का एक ही आदमी द्वारा प्रदर्शन किस प्रकार हो सकता है और वह प्रदर्शन क्यों कर उचितमान हो सकता है इस के लिये एक ऐसे पथ प्रदर्शक की

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

आवश्यकता है जो अकेला इन सब मानवी गुणों का समूह हो। जिस ने जीवन के हर क्षेत्र में क़दम रक्खा हो और نشان قدم हर पथ में अपने क़दमों के निशान छोड़े हों। विश्वइतिहास में ढूंढने से अगर कोई ऐसा मनुष्य है तो वह केवल अबूतालिब के पुत्र हज़रत अली ही हैं। इस बात की आवश्यकता है कि समस्त संसार आप के जीवन के हर क्षेत्र से जानकार हो जाय और उस में अपने पथ प्रदर्शन के चिन्ह खोजे। इसी दृष्टि कोण से यह संक्षिप्त पत्रिका उपस्थित की जा रही है। निस्संदेह यह कुछ पन्ने उस अथाह समुद्र की एक बूंद के बराबर भी नहीं हैं किन्तु इसे एक खाका समझना चाहिये जिस के नमूने पर बड़ी से बड़ी पुस्तक भी तैय्यार हो सकती है।

वंशज

हज़रत अली इबराहीम क़ुरैश के वंश से हाशिम गोत्र के गौरव शाली गृह में अब्दुल मुत्तलिब के पुत्र अबूतालिब के पुत्र नैनसुख थे। आप की माता असद की पुत्री फ़ातिमा थीं वह भी हाशिम के गोत्र की आदरणीय महिला थीं। केवल एक पीढ़ी से आप का वशंज मुहम्मद साहब से मिल जाता है। वह यह कि हज़रत मुहम्मद हज़रत अब्दुल्ला के पुत्र थे और हज़रत अली हज़रत अब्दुल्ला के भाई अबूतालिब के पुत्र थे अबूतालिब ही ने हज़रत मुहम्मद का पोषण भी किया था।

जन्म

हज़रत रसूल की उम्र ३० (तीस) वर्ष की थी जब काबा के पवित्र स्थान पर १३ रजब सन् ३० आमुलफ़ील को हज़रत अली का जन्म हुआ आप के पिता और माता को जो प्रसन्नता होनी चाहिये थी वह तो हुई किन्तु सब से अधिक रसूलिल्लाह

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

को इस बालक के देखने से प्रसन्नता हुई ऐसा प्रतीत होता है कि मानों उसी समय से इस बालक के चिन्ह यह बता रहे थे कि यह रसूल का आने वाले दिनों में दाहिना हाथ एवं सहायक साबित होगा।

पालन पोषण

परिस्थिति ने कुछ ऐसा पलटा खाया कि हज़रत अली का पालन पोषण रसूलिल्लाह के ज़िम्मे हुआ। रसूल ने प्रेम पूर्वक अपना समय इस बालक की शिक्षा तथा आचार को बनाने में लगाया जिस का फल यह हुआ कि अली दस वर्ष की अवस्था में ऐसे थे कि रसूलत्त्व की घोषणा पर वह रसूल के गवाह और उन पर विश्वास लाने वाले हुये।

बेसत

(जब रसूल ने रसूल होने की घोषणा की)

अली केवल दस वर्ष के थे जब हज़रत मुहम्मद रचनात्मक रूप से ईश्वर का संदेश पहुँचाने वाले बने इसी को बेसत कहते हैं। समय, वातावरण, नगर तथा अपनी जाति सब के विरुद्ध एक ऐसा संग्राम आरम्भ किया जा रहा था जिस में रसूल का साथ देने वाला कोई आदमी दिखाई न पड़ता था। बस यही दस वर्ष का बालक था जिसे पैग़म्बर ने इस दिवस के लिये पहले से तैयार किया था। पैग़म्बर साहब ने रसूलत्व का दावा किया और अली ने सब से पहले उस का समर्थन किया रसूल की गवाही दी और रसूल पर विश्वास किया। ईमान को प्रकट कर दिया।

परीक्षा काल

ज्यों ही पैग़म्बर ने रसूलत्व की घोषणा की तो हर ओर

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

जिन जिन की अमानतें रसूलिल्लाह के पास थीं उन तक उन की अमानतों को पहुँचाकर रसूल के घर की स्त्रियों को अपने साथ लेकर मदीने की ओर चल दिये। कई दिन तक रात व दिन पैदल यात्रा इस प्रकार की कि आप के पांव से ख़ून बहने लगा और इस तरीक़े से मदीने में रसूल के पास पहुँचे। इस घटना से सिद्ध होता है कि अली पर रसूल सब से अधिक विश्वास रखते थे। जिस साहस धैर्य तथा विश्वास से अली ने इस कार्य को किया वह अद्वितीय है।

विवाह

रसूल ने मदीने में आकर सब से पहला कार्य यह किया कि अपनी एकलौती पुत्री हज़रत फ़ातमा का विवाह हज़रत अली से कर दिया रसूल अपनी पुत्री को बहुत ही चाहते थे और इतना आदर करते थे कि उन को आते देख कर उन के सम्मान के लिये खड़े हो जाते थे हर व्यक्ति यही चाहता था कि रसूल की इस आदरणीय पुत्री से विवाह करने की प्रतिष्ठा प्राप्त करे। दो एक ने साहस कर के बात चलानी चाही परन्तु रसूल ने सब की इच्छाओं को रद कर दिया और यह कहा कि फ़ातमा का विवाह बिना ईश्वर के आज्ञा के नहीं हो सकता। हिजरत के प्रथम वर्ष ही रसूल ने अली को इस सम्मान के लिये चुना। यह विवाह साधारण रूप से बिना बाजा गाजा और दूसरी बुरी रीतियों के हुआ धर्म तथा संसार के बादशाह की पुत्री को दहेज में पैग़म्बर ने स्वयं कुछ नहीं दिया केवल फ़ातमा (इ० स० भ०) का मेहर अली से लेकर कुछ घरदारी की सामग्री खरीदकर फ़ातमा के साथ कर दी गई। वह भी क्या? कुछ मिट्टी के बर्तन, ख़ुरमे की छाल के तकिये, चमड़े का बिस्तर, चर्खा, चक्की और पानी भरने की मशक यह सामान दिया गया। अ ल

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

ने मेहर अदा करने के लिये अपनी ज़िरह (बक्तर) बेच दी और इस प्रकार हज़रत फ़ातमा का मेहर अदा किया जो एक सौ सात रुपया की तादाद से अधिक न था इस प्रकार मुसलमानों के लिये सदा के लिये एक उदाहरण स्थापित कर दिया गया कि वह अपनी शादी के अवसरों पर फ़ज़ूलखर्ची से काम न लें।

घरदारी

फ़ातमा और अली का गृहस्थ जीवन अद्वितीय आदर्श है। पुरुष और स्त्री किस [illegible] एक दूसरे के जीवन साथी हो सकते हैं। आपस में किस [illegible] र्य विभाजन होना चाहिये और किस प्रकार एक दूसरे [illegible] न में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। वह घर दुनिया के शृंङ्गार से दूर आराम अलग मेहनत और परिश्रम के साथ साथ सन्तोष आपस के प्रेम एवं विश्वास के रूप में स्वर्ग था। जहां से अली प्रातः काल मशक ले कर जाते थे यहूदियों के बाग़ीचों में पानी देते थे और इस प्रकार जो कुछ मज़दूरी मिलती थी उसे ले कर घर पर आते थे बाज़ार से जौ ख़रीद कर लाते उसे फ़ातमा को देते थे और फ़ातमा चक्की पीसतीं, खाना पकातीं घर में झाड़ू देती थीं। अवकाश के समय चरख़ा चलातीं और स्वयं अपने तथा अपने घर वालों के लिये और कभी कभीं मज़दूरी पर सूत कातती थीं। इस प्रकार घर में रह कर पति के साथ जीवन संग्राम में हाथ बटातीं थीं।

जिहाद

मक्के में आकर पैग़म्बर साहब को विरोधी वर्ग ने विश्राम न करने दिया। आप के वह चेले जो मक्के में थे उन्हें हर प्रकार का कष्ट दिया जाने लगा और प्रायः लोगों को क़त्ल, कैद आदि दुःख पहुँचाये गये यहीं तक नहीं बल्कि शस्त्र तथा

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

सेना एकत्रित कर के स्वयं रसूल के खिलाफ़ मदीने पर चढ़ाई कर दी। इस अवसर पर रसूल का नैतिक कर्तव्य था कि वह मदीने वालों के घरों की रक्षा करते जिन्हों ने आप को दुःख पूर्ण वातावरण में शरण दिया था। और आप की सहायता का वचन दिया था। आप ने यह किसी प्रकार न चाहा कि आप शहर के अन्दर घिर कर युद्ध करें और मदीने के शांतपूर्ण वातावरण को भंग करें स्त्रियों तथा बच्चों को संकट में डालें हालांकि आप के साथ संख्या केवल तीन सौ तेरह आदमियों की थी। शस्त्र भी न थे किन्तु आप ने यह तै कर लिया कि आप बाहर निकल कर शत्रु से युद्ध करेंगे। इस प्रकार इस्लाम का प्रथम युद्ध हुआ जो बद्र के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध में रसूल ने अधिक भय में अपने रिश्ते दारों को डाला अतएव आप के चचाज़ाद भाई हारिस के पुत्र उबैदा इस युद्ध में शहीद हुये। अली को यह युद्ध का प्रथम अनुभव था। और केवल पचीस (२५) वर्ष की अवस्था थी परन्तु युद्ध की जीत का सेहरा अली के ही मस्तक पर बंधा। जितने मुशरिकीन मारे गये उन में आधे से अधिक केवल अली के हाथों मारे गये। और आधे सभी लड़ने वालों ने मिलकर मारे। इसके पश्चात उहद, खैबर तथा खंदक के युद्ध में या अन्त में हुनैन के युद्ध में जो महा युद्ध थे अली ने रसूल के साथ रह कर अपनी अनुपम वीरता का परिचय दिया। क़रीब क़रीब इन सभी युद्धों में अली ही को नेतृत्व प्राप्त हुआ। इस के उपरांत बहुत से ऐसे युद्ध थे जिन में रसूल ने अली को अकेला भेजा। इन्हों ने तिसपर भी विजय प्राप्त की। इस प्रकार अली ने बड़ी वीरता का परिचय दिया और अतीत सहन तथा आचार का दर्शन किया जिस को उन के शत्रु भी मानते थे। उहद के

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

युद्ध में शत्रु के सब से बड़े योधा अब्देबुद के पुत्र अम्र को आप ने हरा दिया और उस का सिर काटने के हेतु उसके सीने पर आप बैठे तो उस ने आप के मुंह पर थूक दिया। आप को बड़ा क्रोध आया और आप उस के सीने पर से उतर आये केवल इस कारण उतर आये कि यदि क्रोध में उस को मारा तो ईश्वरीय मार्ग में उस को न मारा बल्कि अपनी इच्छानुसार मारना माना जायेगा। और कुछ देर के बाद आप ने उस को क़त्ल कर डाला। इस काल में शत्रु को मार डालने के बाद उस की लाश को नङ्गा कर देते थे परन्तु हज़रत अली ने उस की ज़िरह (बक्तर) नहीं उतारी यद्यपि वह बहुत मूल्यवान थी। अतएव जब उस की बहिन उस की लाश पर आई तो उसने कहा कि मैं अपने भाई को सदा रोती यदि उस का मारने वाला कोई और होता किन्तु मुझे यह देख कर सहन है कि अली जैसा नीतिवान मनुष्य इस का मारने वाला है जिस ने अपने शत्रु की लाश की दुरदशा नहीं की। आप ने कभी शत्रु की स्त्रियों तथा बच्चों पर हाथ नहीं उठाया। और कभी लूट के माल की ओर दृष्ट नहीं की।

सेवाएं

जिहाद के अतिरिक्त इस्लाम एवं पैग़म्बरे इस्लाम के लिये किसी कार्य करने में आप को कोई इन्कार नहीं था। यह कार्य विभिन्न प्रकार के थे रसूल की ओर से संधि तथा दूसरे अहदनामों का लिखना भी प्रायः आप के ज़िम्मे होता था। और आप ने पवित्र कुरान के पारों को आप ही ने लिख कर उसके घरोहर बने इस के अतिरिक्त यमन की ओर इस्लाम धर्म के प्रचार के लिये पैग़म्बर ने आप को रवाना किया। जिस में आप के सफल प्रचार का यह फल हुआ कि पूरा यमन मुसलमान हो गया।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

जब बरात का अध्याय (क़ुरान का सूरा) ईश्वर की ओर से उतरा तो अल्लाह के आदेशानुसार आप ही इस के प्रचार करने के लिये नियुक्त हुये। और आप ने जाकर मुशरिकीन को यह अध्याय सुनाया। इस के अतिरिक्त हज़रत रसूल की सेवा करने को हर समय आप तय्यार रहते थे यहां तक कि आप को रसूल के जूते भी हाथ से सीते हुये देखा गया अली इसे अपने लिये गर्व का कारण समझते थे।

प्रतिष्ठा तथा पद

हज़रत अली की सेवाओं के कारण रसूल उन का बहुत आदर करते थे और अपने कथन तथा कार्य से इन के गुणों को प्रकट करते रहते थे और कभी यह कहते थे कि "अली मुझ से है और मैं अली से हूँ" कभी यह कहा कि "मैं विद्या का नगर हूँ और अली उस के फाटक हैं"। "तुम सब में सब से अच्छा न्याय करने वाला अली हैं"। कभी यह कहा कि अली को मुझ से वही सम्बन्ध है जो हज़रत हारून नबी को हजरत मूसा नबी से था। कभी यह कहा कि "अली मुझ से इस प्रकार सम्बन्धित हैं जैसे आत्मा शरीर से या शरीर, सिर से, कभी यह कहा कि "वह ख़ुदा और रसूल को सब से अधिक प्रिय हैं"। यहां तक कि मुबाहले (प्रतियोगिता) की घटना के समय अली को रसूल ने अपनी जान कह कर सम्बोधित किया। इस के अतिरिक्त आप को रचनात्मक प्रतिष्ठा यह थी कि जब मस्जिद के अन्दर वाले सब के द्वार बन्द हो गये तो आप का द्वार खुला रह गया। जब सहायकों तथा शरणार्थियों को भाई भाई बनाया गया और अन्त में हज़ारों आदमियों के समक्ष ग़दीरे ख़ुम के मैदान में हज़ारों मुसलमानों के बीच अली को अपने हाथों ऊंचा कर के यह घोषणा की कि "जिस प्रकार मैं

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

मुसलमानों का संरक्षक एवं हाकिम हूँ उसी प्रकार अली भी सब के संरक्षक तथा हाकिम हैं" यह इतना बड़ा आदर था कि तमाम मुसलमानों ने आप को बधाई दी और सब ने यह समझा कि पैग़म्बर ने अली की उत्तराधिकारी तथा जानशीनी की घोषणा की।

रसूल की मृत्यु

हिजरत को दस वर्ष पूरे हुये थे जब पैग़म्बरे ख़ुदा को उस बीमारी ने घेरा जो मृत्यु की बीमारी आप के लिये सिद्ध हुई यह रसूल के कुल के लिये बड़ी विपदा का समय था। अली रसूल की बीमारी में हर समय रसूल के पास रहते थे और उन की सेवा करते थे और क्षणमात्र के लिये वहां से हटना स्वीकृत न था। यहां तक कि वह समय आया जब रसूल का दम निकलने वाला था और आप ने अली को बुलाकर सीने से लगाया और बड़ी देर तक धीरे धीरे बातें करते रहे और आवश्यक वसीयतें कीं इस बात चीत के बाद भी अली को अपने से अलग न होने दिया और उन का हाथ अपने सीने पर रख लिया। जिस समय रसूल ने शरीर को त्याग दिया उस समय अली का हाथ रसूल के सीने पर ही था।

रसूल के बाद

जिस ने जीवन भर रसूल का साथ दिया वह रसूल के मरने के पश्चात उस की लाश को क्यों कर छोड़ सकता था अतएव रसूल के कफ़न दफ़न का प्रबन्ध भी अली ही के हाथों द्वारा हुआ। और क़ब्र में भी रसूल को अली ने ही उतारा। जब रसूल के दफ़न कफ़न क्रिया समाप्त हुई तो अली को यह ज्ञात हुआ कि रसूल के ख़लीफ़ा का चुनाव हो गया। यदि दूसरा आदमी होता तो युद्ध करने पर तुल जाता परन्तु अली को इस्लाम की भलाई का इतना ध्यान था कि आप ने अपने

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

अधिकारों की घोषणा होते हुये भी अपनी ओर से मुसलमानों में गृहसंग्राम उत्पन्न न होने दिया। न केवल यह कि आप ने युद्ध करना न चाहा बल्कि जिस समय आवश्यकता पड़ी उस समय इस्लाम की भलाई के हेतु आप ने सहायता देने से इन्कार भी नहीं किया। घोर समस्याओं के निर्णय करने में कभी राय देने से पहलू न बचाया। इस के अतिरिक्त स्वयं गुप्त रूप से इस्लाम की हर प्रकार से सेवा करते रहे। क़ुरान पाक को क्रमशः अध्यायों के रूप में एकत्रित किया और उन को सब आवश्यक टिप्पणियों के साथ विस्तार पूर्वक सम्पादन किया। मुसलमानों के शिक्षित वर्ग से लिखने पढ़ने तथा विद्यात्मक गवषण की रुचि उत्पन्न की और स्वयं दर्शन शास्त्र तथा धार्मिक आदेशों के शास्त्र को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया बहुत से ऐसे चेले तय्यार किये जो मुसलमानों के भविष्य के जीवन के लिये लाभमय कार्य दे सके। अरबी भाषा की रक्षा के लिये व्याकरण के सिद्धांत बनाए। इस प्रकार हम को यह बताया कि यदि वातावरण तथा समय प्रतिकूल भी हो तो मनुष्य को एकान्त में रह कर अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। आत्म-प्रतिष्ठा तथा पद के हेतु जातीय मर्यादा को हानि न पहुँचाया जाय। और सम्भवतः मनुष्य अपनी जाति, धर्म, लक्ष की सेवा हर हाल में करता रहे।

ख़िलाफ़त

पचीस वर्ष तक लगातार अली ने रसूल की मृत्यु के पश्चात घरेलू जीवन तथा एकान्त में व्यतीत किया। सन् ३५ हिजरी में मुसलमानों ने इस्लाम की ख़िलाफ़त का पद अली को दिया तो आप ने पहले इन्कार किया परन्तु जब मुसलमानों ने बहुत ज़िद की तो आप ने इस शर्त के साथ ख़िलाफ़त को स्वीकार किया

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust
कि मैं बिलकुल कुरान तथा रसूल के कथनानुसार शासन करूंगा और किसी के साथ रियायत न करूँगा। सत्य तथा न्याय के नाम पर ही शासन करूंगा। परन्तु संसार आप के धार्मिक शासन को सहन न कर सका। आप के विपरित उमइया गोत्र तथा दूसरे लोग खड़े हो गये क्यों कि उन के सांसारिक मर्यादा में आप की धार्मिक नीति से कमी होने का भय था। आप ने इन सब से मुक़ाबला करना अपना कर्तव्य समझा जमल, सिफ्फीन, नहरवान के भयंकर युद्ध हुये जिन में अली ने अपनी वीरता दिखाई और उसी प्रकार लड़े जिस प्रकार बहुत सी पिछली लड़ाईयों उहद खन्दक़ आदि में लड़े थे। इन युद्धों में फसें रहने के कारण आप को इतना अवसर प्राप्त न हो सका कि आप अपनी इच्छानुसार सुधार कर सकें। फिर भी आप ने इस कम समय में इस्लाम के साधारण जीवन, भाईचारा बराबरी तथा समानान्ता के हेतु स्वालम्ब एवं परिश्रम की शिक्षा आप ने रचनात्मक ढंग से दी। इस्लामी हुकूमत के सम्राट होते हुये भी आप ने खजूरें बेचीं फटे हुये पेबन्दार कपड़े पहने, ग़रीबों के साथ भू पर बैठकर खाना खाया और जो रुपया खज़ाने में आता उसे आवश्यकता रखने वाले व्यक्तियों को बराबर बराबर बाँट दिया करते थे। यहां तक की आप के सगे भाई अक़ील ने यह चाहा कि उन्हें कुल मुसलमानों से कुछ अधिक मिल जाय परन्तु आप ने इन्कार कर दिया और कहा कि सरकारी रुपया मेरा अपना धन नहीं मैं बेईमानी नहीं कर सकता यह सब मुसलमानों की उमैनिष्ट सम्पत्ति है। मुझे अधिकार नहीं कि मैं अपने किसी रिश्तेदार को कुछ अधिक दे सकूं। यहां तक कि रात को बैतुलमाल (खज़ाना शाही) में बैठे हिसाब किताब कर रहे हैं और कोई मिलने आ गया तो दिया भुजा दिया ताकि अपनी बात चीत और व्यक्तिगत बारे में

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

बैतुलमाल के दीपक को जला कर बैतुलमाल को हानि न पहुँचाया जाय। आप यही प्रयत्न करते थे कि जो कुछ इस्लामी खज़ाने में आये वह शीघ्र हक़दारों को बहुँच जाय आप खज़ाने में धन को जमा रखना अच्छा न जानते थे।

शहादत (हत्याकाण्ड)

बड़े शोक के साथ कहना पड़ता है कि शांति का यह पुजारी, आचारनीति का आकार इस्लामी संस्कृत्य का प्रदर्शक भी शहीद कर डाला गया। १८ रमज़ान सन् ४० हिजरी प्रातः नमाज़ पढ़ने में विष बुझी तलवार से आप को पीड़ा पहुँचाई गई। आप की करुणा और समानान्ता की विचार धारा का यह हाल था कि जब आप के हत्यारे को बन्दी कर आप के समक्ष लाया गया और आप ने देखा कि उस का चेहरा पीला पड़ गया है और आंखों से आंसू निकल रहे हैं तो आप को उस पर भी दया आ गई। और आप ने दोनों पुत्रों इमाम हसन और इमाम हुसैन को आदेश दिया कि यह तुम्हारा क़ैदी है। इस के साथ कठोरता न दिखलाना जो खुद खाना वह इस को खिलाना। यद्यपि मैं अच्छा हो गया तो मुझे अधिकार है चाहूँगा तो सज़ा दूंगा या क्षमा प्रदान करूँगा। और यदि मैं जीवित न रहा और तुम ने बदला लेना चाहा तो उसे केवल तलवार की एक ही चोट लगाना क्योंकि इसने मेरे एक ही चोट लगाई है और कदापि इस के हाथ पांव काटे न जायें इस लिये कि यह इस्लामी शिक्षा के प्रतिकूल है। दो रोज़ तक अली बिस्तर पर बड़ी बेचैनी और कष्ट में जीवित रहे। अन्त में विष शरीर में फैल गया और २१ रमज़ान को सवेरा होते होते आप की आत्मा ने आप के शरीर से विदा ली। इमाम हसन और इमाम हुसैन ने आप की अन्तिम क्रिया समाप्त की। इस प्रकार नजफ़ की भू में मानवता मुकुटधारी आदर्श पुरुष सदा के हेतु दफ़न कर दिया गया।

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इमामिया मिशन लखनऊ

यह मिशन सन् १९३२ ई० में स्थापित हुआ था। यह मिशन वास्तविक इस्लाम के साहित्य का प्रकाशन करता है तथा इस्लाम के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बियों में बिना मूल्य लिये अपनी पुस्तकों को वितरित करता है। इस मिशन की सहायता सदस्यता पुस्तकों के क्रय एवं अनुदान के द्वारा की जा सकती है।

सदस्यता के शुल्कों की सूची निम्नलिखित है।

१-	विशेष अनुदान देने वालों के लिये	५००)	एक बार में
२-	संरक्षक	१००)	,, ,,
३-	जीवन सदस्य	५०)	,, ,,
४-	विशेष सदस्य	५)	वार्षिक
५-	साधारण सदस्य	१)	,,

टिप्पणी :- १- विशेष अनुदान देने वाले एवं संरक्षक मिशन के नये तथा पुराने प्रकाशन बिना मूल्य लिये प्राप्त कर सकेंगे।

२- जीवन सदस्य अपनी सदस्यता के पश्चात के सभी प्रकाशन बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे तथा उसके पूर्व के प्रकाशनों को आधे मूल्य पर प्राप्त कर सकते हैं।

३- विशेष सदस्य अपने सदस्य होने के उपरान्त सभी प्रकाशन बिना मूल्य प्राप्त कर सकेंगे।

४- साधारण सदस्य अपनी सदस्यता के पश्चात के प्रकाशनों को आधे मूल्य पर प्राप्त कर सकेंगे।

अवैतनिक सचिव
इमामिया मिशन
नखास, लखनऊ (भारत)

Channel eGangotri Urdu

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri Trust

इस्लाम की शिक्षा के जीते जागते उदाहरण हज़रत मुहम्मद साहब तथा उनकी आदर्शमय जीवन यापन करने वाली सन्तानों की जीवनियाँ।

१—शान्ति सन्देशक
२—स्वर्ग बाला
३—अश्रान्तात्मा
४—शान्ति-स्रोत
५—अमर सेनानी
६—धैर्य सागर
७—ज्ञान भानु
८—सत्यास्तम्भ
९—संयम शिखर
१०—सर्वमान्य अज़ी
११—धर्मोद्गम
१२—महातपस्वी बन्दी
१३—विजयी कारागृही
१४—अंतिम पथ-प्रदर्शक

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ।) तथा डाक व्यय ~),

मिलने का पता:—

आनरेरी सेक्रेटरी
इमामिया मिशन
लखनऊ
(भारत वर्ष)

मुद्रक :—डायमन्ड प्रेस, ४०९ शाहगंज, इलाहाबाद-

Channel eGangotri Urdu